Str. 76. b. Lois. schreibt इमिन्स पूर्णम् getrennt, als wenn das Substantiv ein Neutrum wäre. Jones übersetzt: « filled with no sweet perfume, but loaded with feces and urine ».

Str. 77. b. Kull. र्जस्वल = र्जागुणयुक्त ।

Str. 78. a. Kull. नदीकूलं यथा वृत्तस्त्यति । स्वपातमतानवेव नदी-रयेण पात्यते । — यथा पत्ती वृत्तं स्वेच्ह्या त्यति ।

Str. 80. a. Raghav. भावेन देाषभावनया परमात्मभावनया वा ।

Str. 83. Kull. म्रिधियज्ञमिति यज्ञमधिकृत्य प्रवृत्तं ब्रह्म वेदं तथा देव-तामधिकृत्य प्रवृत्तं तथा जीवमधिकृत्य तथा वेदालेषूक्तं सत्यं ज्ञानमनलं ब्रह्म इत्यादि ब्रह्मप्रतिपादकं सर्वदा जपेत्

Str. 85. a. Haughton und Lois. schreiben fälschlich क्रामयोगेन। Vgl. «Zeitschrift f. d. K. d. M.» Bd. IV. S. 362. §. 14.

Str. 86. Kull. एष यतीनां यतात्मनां चतुर्णामेव कुरीचर्काबक्टरकरूं-सपर्मक्ंसानां साधार्णो धर्मी वा युष्माकमुक्तः (ed. Calc. उक्तम्, Lois. उक्त)। इदानीं यतिविशेषाणां कुरीचराष्ट्यानां वेदविक्तितादिकर्मत्यागिनां (Lois. योगिनाम् st. त्यागिनाम्) म्रसाधारणां वक्त्यमाणां पुत्रैश्चर्ये सुखं वसेदिति (Str. 95. b.) कर्मसंबन्धं प्रणात । Vgl. Kull. zu Str. 95.

Str. 89. a. Einige Handschriften lesen ग्रुति st. स्मृति ।

Str. 91. a चतुर्भिरिप «von allen vier». Vgl. VII. 49. a. — 200. a. und zu Çak. 29. 20.

Str. 95. Kull. सर्वाणि गृरुस्थानुष्ठेयाग्निके।त्रादिकर्माणि पिर्त्यस्य स्रज्ञातज्ञत्त्रव्यादिकर्मजीतितपापानि च प्राणायामादिना नाशयित्रयत्तेन्द्रिय उपनिषदे। प्रन्थता पर्यतस्थाभ्यस्य पुत्रैस्वर्य इति पुत्रगृरु पुत्रोपकित्यतभा- जनाच्हादनवेन वृत्तिचित्तारिहतः सुखं वसेत् स्रयमेवासाधारणो धर्मः कुटी- चरस्योक्तः।